: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

EMD, SHANTIKUNJ
HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संस्कृति के अग्रदूत चेतें, उत्तरदायित्व निभाने आगे आएँ

★

भारत में जन्मी देव संस्कृति विश्व सम्पदा है। सूरज पूरब से निकलता है तो भी सारे संसार को प्राण चेतना प्रदान करता है। सूर्य किरणों की तरह ही देव संस्कृति ने भी पुरातन काल में संसार भर के मनुष्यों को प्रगति, व्यवस्था शालीनता का पाठ पढ़ाया है। मध्यकाल में छाये कुछ शताब्दियों के कुहा से के छट जाने के बाद अब फिर ऐसी स्थिति है कि वह विश्व के पुनर्निर्माण में अपना महान योगदान देने की भूमिका सम्पन्न कर सके।

गत सौ वर्षों में भौतिक दृष्टि से विश्व प्रगति की दिशा में आगे बढ़ा है। वैज्ञानिक अविष्कारों ने सुविधा साधन बढ़ाए हैं। आर्थिक और बौद्धिकदृष्टि से हुई इस प्रगति के बावजूद हम पाते हैं कि शरीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से मनुष्य और अधिक दुर्बल-उद्विग्न, अधिक संकीर्ण एवं अभाव ग्रस्त हो गया है। परिवार संस्था में न अब पारस्परिक स्नेह है न सहकार। आवेश के टकराव व आपाधापी की नीति के कारण अपराधी दुष्प्रवृत्तियों की ऐसी बाढ़ आई है जिसने चिर संचित सभ्यता को समूल नष्ट कर देने की चुनौती खड़ी कर दी है। कुल मिलाकर आज का व्यक्ति पूर्वजों की तुलना में चेतना की दृष्टि से दीन दरिद्र और संवेदना शून्य हो चला है, भले ही बाहर से वह सम्पन्नता शालीनता का मुखौटा बाँधे क्यों न फिरता हो।

दूर दर्शियों का कथन है कि "प्रगति के साथ बढ़ी दुर्गति से व्यक्ति की जो दुर्गति हुई है, उसके परिणाम सारे संसार के लिये अभिशाप बनकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भविष्य को अन्धकारमय किये दे रहे हैं। लक्ष्य विहीन प्रगति की परिणति निश्चित ही भयावह होगी। चिंतन की विकृति की अदृश्य जगत में प्रतिक्रिया प्रकृति कोप एवं विक्षुब्ध वातावरण के रूप में देखी जा सकती है। ऐसा लगता है, मानों सामूहिक महाविनाश की सुनियोजित तैयारी चल रही है।" परिस्थितियों को देखते हुए यह निष्कर्ष सत्य प्रतीत होता लगता है।

समाधान एक ही है कि चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में आदर्शवादी आस्थाओं की प्रतिष्ठापना करने वाली देव संस्कृति को पुनर्जीवित किया जाय, शालीनता, सहकार, स्नेह सदभाव से भरा जीवन ही भारत की देव संस्कृति का पर्याय है, जिसकी उपेक्षा से मनुष्य के पतन का माहौल बना है।

मानवी गरिमा को सुरक्षित रखने वाली देव संस्कृति को प्रखर बनाया जाना ही आज का युग धर्म है। भारतीय संस्कृति के अनुयायी भले ही किसी भी देश में रहते हों, उनमें से प्रत्येक का यह कर्तव्य है कि वह अपनी-अपनी संस्कृति की ही नहीं सारे संसार की सुख शान्ति हेतु फिर से उन देव परम्पराओं को पुनर्जीवित करने में भाव-भरा योगदान दें जिन्हें प्रचलित कर कभी भारतवासियों ने सतयुगी परिस्थितियाँ निर्मित की थी।

वैज्ञानिकों, बुद्धिजीवियों द्वारा पिछले दिनों किये गए कार्यों से यह कहीं अधिक महत्व पूर्ण है कि भावनाओं, आकांक्षाओं एवं गतिविधियों में उत्कृष्टता का समावेश कर सकने में सर्वथा समर्थ देव संस्कृति के स्वरूप एवं उद्देश्य को सही रूप में संसार भर के सम्मुख प्रस्तुत करने में कुछ उठा न रखा जाय। इसके सहारे ही मानवता को विनाश की चुनौती से बचाया जा सकता है। समय की माँग है कि ध्वंस लीला आरम्भ होने के पूर्व ही संस्कृति के अग्रदूत चेतें उज्ज्वल भविष्य के मार्ग में आए अवरोधों को दूर हटाएँ।

भारत भूमि से भूतकाल की तरह इनदिनों भी विश्वमानव को भ्रान्तियों से उबरने का मार्ग दिखाने वाला अभियान तूफानी गति से चल पड़ा है। उसके सत्परिणाम भी सामने आ रहे हैं। लेकिन युग परिवर्तन के ये प्रयास किसी छोटी सीमा में अवरुद्ध नहीं रखे जा सकते। इन्हें विश्व व्यापी बनाने का काम उनका है जो भारतीय संस्कृति की गरिमा से परिचित हैं और अन्य देशों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में निवास करने के कारण उसे फैला सकने में समर्थ हैं। दीपक जहाँ जलता है, वहीं रोशनी देता है। हीटर जहाँ जलता है, वहीं गर्मी फैलाता है। हर प्रवासी भारतीय का सामयिक एवं चिर स्थायी कर्तव्य यही है कि वह जहाँ भी रहे वहाँ अन्यान्य प्रकार की सृजन सेवाएँ करते हुए युग समस्याओं के समाधान हेतु सम्बद्ध क्षेत्र को परिचित प्रभावित करने में कुछ उठा न रखें। विश्वमानव की सेवा साधना का यह पुण्य सम्पादन हमारे पूर्वजों की परम्पराओं का पुनर्जीवन ही है। जिन्होंने धरती को "स्वर्गादपि गरीयसी" का मान दिलाया व स्वयं देव मानव कहलाए।

यह सब कैसे किया जाय ? इसका एक ही उत्तर है कि प्रवासी भारतीय स्वयं देव संस्कृति का उत्तराधिकारी प्रतिनिधि अनुभव करें। सम्पर्क क्षेत्र को इस प्रकार की महिमा व परिणति समझाते रहें। शुभारम्भ वे निजी जीवन और परिवार से करें। जिनके अपने विश्वास प्रगाढ़ हैं----जो आदर्शों का स्वयं परिपालन करते हैं, उन्हीं के लिये यह संभव है कि वे दूसरों को आकर्षित अनुप्राणित करें, अपनाने के लिए सहमत करें।

इस दृष्टि से आवश्यक है कि प्रवासी भारतीय जहाँ भी रहते हों; संघ बद्ध होकर रहें। परस्पर मिलने-जुलने का क्रम बनाएँ और ऐसे उपाय सोचें--अपनाएँ जिनसे अपने समुदाय में देव संस्कृति की निष्ठा और परम्परा प्रगाढ़ बनी रहे, साथ ही उस स्थान पर भी प्रकाश फैलना संभव हो सके जहाँ अभी समुचित जानकारी के अभाव में अन्धकार जैसी स्थिति बनी हुई है।

युगान्तर चेतना का उद्भव प्रज्ञा अभियान के रूप में भारत भूमि से पुनः हो रहा है। ऐसा कुछ इस माध्यम से किया जा रहा है, जिस पर गर्व किया जा सके। अब बारी उस सभ्यता का देश-देशान्तरों में प्रतिनिधित्व करने वाले प्रवासी भारतीयों की है जिन्हें हर क्षेत्र के मनुष्य समुदाय को देव संस्कृति का वह स्वरूप समझाना है जो संव्याप्त पतन पराभव तथा भावी महाविनाश से समूची मनुष्य जाति को बचा सकती है।

सर्व प्रथम कार्य तो यह है कि विभिन्न जाति या सम्प्रदाय के व्यक्ति जो प्रवासी भारतीयों के रूप में विदेशों में बसे हैं एक परिवार की तरह रहने लगें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भारत बहुत बड़ा देश है। उसमें अनेकों भाषाएँ बोली जाती हैं और अनेकों सम्प्रदायों की भर मार है। इस विभिन्नता विचित्रता के बावजूद एकात्मता यहां की विशेषता है। देव संस्कृति के अनुयायी प्राचीन काल से इसी प्रकार की एकता बनाये रहे हैं। दर्शन की भिन्नता के कारण उन्होंने कभी व्यवहार भेद नहीं होने दिया। अब नव युग की वेला में वर्ग भेद न पनपने देकर एक माता के पुत्रों जैसी एकात्मता उत्पन्न करनी चाहिए।

युग निर्माण योजना की लालमशाल इसी संघ शक्ति का प्रतीक है। सभी को अब इसके नीचे एक जुट हो जाना चाहिए। इस हेतु आवश्यक है कि समय-समय पर इन देशों के सम्मेलन समारोह होते रहें। इससे एक दूसरे को परिचित होने का अवसर मिलता है और प्रेमभाव बढ़ता है। मिल जुलकर विचार करने पर ऐसा मार्ग मिलता है जिससे सामूहिक कठिनाईयों से निपटना एवं प्रगतिशीलता के मार्ग पर चल सकना संभव हो सके। इनदिनों हमें युग निर्माण सम्मेलनों की हर क्षेत्र में व्यवस्था बनानी चाहिए ताकि समीपवर्ती लोग सफलता पूर्वक उनमें सम्मिलित होते रहें। पूरे देश या क्षेत्र का बड़ा समारोह तो यदा कदा कहीं-कहीं ही हो सकता है क्योंकि उसके लिए बड़े साधन जुटाने पड़ते हैं जिनकी व्यवस्था बनाना प्रायः बड़ों के सहयोग, साधन सम्पन्न एवं प्रखर व्यक्तियों से ही संभव है।

प्रायः चौहत्तर देशों में प्रवासी भारतीय अच्छी संख्या में रहते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि सामूहिक गायत्री पुरश्चरण, प्रज्ञा पुराण कथा गायत्री यज्ञ, युग निर्माण सम्मेलन, संगीत-कीर्तन जैसे कार्यक्रमों के साथ सम्मेलन समारोहों का भी क्रम चल पड़े। वे कभी-कभी देश भर में होते रह सकते हैं। अन्यथा क्षेत्रीय एवं स्थानीय स्तर पर तो उन्हें लगातार किया ही जाना चाहिए पारस्परिक स्नेह सौजन्य उत्पन्न करने वाली घनिष्ठता इस आधार पर और आगे बढ़ाई जा सकती है। साथ ही ऐसी योजनाएँ भी उसी अवसर पर बनती रह सकती हैं जिनका कार्यान्वियन स्थानीय परिस्थितियों में संभव हो।

दूसरा कार्यक्रम जो शुभारम्भ के रूप में किया जाना चाहिए वह यह है कि प्रज्ञा प्रकाशन विभाग हर देश में स्थापित किया जाय, जिससे देव-संस्कृति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

के आधार भूत सिद्धान्तों और प्रचलनों की महत्ता एवं उपयोगिता से सर्व–साधारण को अवगत कराते रह सकना संभव हो सके। समारोह प्रवचन तो यदा-कदा ही होते हैं जबकि बौद्धिक प्रशिक्षण की आवश्यकता निरन्तर बनी रहती है। यह कार्य तभी हो सकता है जबकि नियमित रुप से उस विषय का साहित्य उपलब्ध होता रहे। इनकी छाप अधिक समय तक बनी रहती है। सतत साहित्य साथ रहने से ही संस्कार प्रबल होते हैं। सशक्त लोक शिक्षण की गाड़ी उससे कम में नहीं चल सकती।

इस सन्दर्भ में कुछ राष्ट्रों विशेषतः यू. के. के परिजनों ने उत्साह वर्धक कदम उठाए हैं और दूसरों द्वारा अपनाए जाने योग्य उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। अच्छा तो यह हो कि हर देश में प्रवासी भारतीयों के द्वारा गायत्री परिवार सम्मेलन सम्पन्न हों। यह कार्य इंग्लैण्ड वालों ने सर्व प्रथम कर दिखाया अब अन्य देशों की बारी है। उन्हें भी इस कार्य को छुट पुट ढंग से नहीं, योजना बद्ध रुप से बड़े आकार में बड़े सरंजाम के साथ सम्पन्न करना चाहिए। हर सम्मेलन का उद्देश्य देव संस्कृति के प्रचार—प्रसार हेतु कार्यक्रमों का सुनियोजित क्रियान्वयन होना चाहिये।

आशा की जानी चाहिए कि अब तक जिन ७४ देशों में युगान्तरीय चेतना का आलोक पहुँचा है उन सभी स्थानों पर ऐसे ही विशालकाय आयोजन होंगे और उनकी शाखा-प्रशाखाओं के रूप में छोटे-छोटे स्थानीय प्रज्ञा समारोहों का क्रम भी भली प्रकार चल पड़ेगा। यही प्रक्रिया भारतभूमि में अपनाई गयी है। इससे बड़ी संख्या में जन मानस प्रभावित हुआ है एवं नितान्त अछूते पड़े क्षेत्रों तक प्रज्ञा आलोक पहुँचा है। यही क्रम देश—देशान्तरों में क्रियान्वित किया जाना है।

साहित्य प्रकाशन के सम्बन्ध में भी इंग्लैण्ड द्वारा उठाया गया प्रथम कदम भूरिभूरि प्रशंसा के योग्य है। पिछले दिनों वहां से एक स्मारिका प्रकाशित हुई। उसमें मिशन के महत्वपूर्ण पक्षों पर प्रकाश डाला गया था। भारत वर्ष में इस प्रयास को बहुत सराहा गया और इसके आयोजन कर्त्ताओं की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा हुई। ऐसे ही वार्षिक प्रकाशन अपने–अपने देशों में अन्यान्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रवासी बन्धु भी कर सकते हैं। यह प्रयोग न तो खर्चीला है, न समय साध्य। इसकी लागत विज्ञापनों से ही निकल आती है। अधिक दौड़ धूप करने पर अधिक व्यक्तियों से सम्पर्क कर पाना, कुछ बचत कर प्रज्ञा आयोजनों का खर्च जुटा सकना भी संभव है।

स्थायी प्रकाशन की बात हर देश में सोची जानी चाहिए। देव संस्कृति के आदर्शों से अनुप्राणित साहित्य को घर-घर पहुँचाने और युग सन्देश से जन-जन को अवगत कराने के लिये प्रज्ञा साहित्य की बड़े परिमाण में आवश्यकता है। युग समस्याओं के समाधान की अनेकानेक दिशाधाराएँ हैं। उनसे सर्व-साधारण को परिचित कराने के लिए आवश्यक है कि प्राणवान, सस्ता एवं सामयिक साहित्य प्रकाशन नियमित रूप से होता रहे। भारत में चालीस पैसा सीरीज की फोल्डर पुस्तिकाएँ हर वर्ष लाखों-करोड़ों की संख्या में प्रकाशित प्रचारित होती हैं। आवश्यकता है कि यही प्रकाशन क्रम हर देश में हर भाषा में स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार चल पड़े।

भारत से छपा साहित्य भेजा जाय, इसकी तुलना में सरल तरीका यही है कि हर देश में प्रज्ञा प्रकाशन के लिये अपनी-अपनी व्यवस्था हो। छोटी फोटो ऑफसेट प्रेसों के माध्यम से न्यूनतम पूंजी से भी यह प्रकाशन क्रम चलता रह सकता है। प्रकाशन को खपाने के लिये स्थायी सदस्यों की शृंखला बने। सदस्यों के पास नियमित रूप से फोल्डर साहित्य पहुँचता और वितरित होता रहे। हर महीने एक सेट छपता रहे तो यह मासिक पत्रिका प्रकाशित करने की तुलना में कहीं अधिक सुगम और प्रभावी कार्यक्रम माना जा सकता है। इसकी पहल भी इग्लैण्ड से होगी तो इसका अनुकरण चौहत्तर अन्य देशों में भी चल पड़ेगा इसकी भाव-भरी आशा की गयी है और कार्यान्वयन पर पूरा विश्वास रखा गया है।

वाणी के माध्यम से प्रवचन समारोहों की योजना बनानी चाहिए और लेखनी के माध्यम से साहित्य प्रकाशन की व्यवस्था होनी चाहिए। इनदिनों वाणी और लेखनी की शक्ति ही विचार परिवर्तन की दृष्टि से समर्थ साधन माने गए हैं। युग परिवर्तन का अर्थ विचार परिवर्तन है। इसके लिये उपरोक्त दोनों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साधनों का उपयोग किया जाना चाहिए ।

समारोह प्रेस प्रकाशन के बाद तीसरा उपाय है साप्ताहिक सत्संग । इसके लिये अपना स्थान बनाया जा सकता है । किसी अन्य के स्थान का भी उस अवधि के लिये उपयोग हो सकता है । केन्द्रीय कार्यालय के लिए भी आखिर स्थान तो चाहिए ही और यदि स्थान हो तो उसमें गतिविधियां भी चलनी चाहिए । यह क्रम साप्ताहिक उपासना एवं कथा सत्संग के रूप में चलता रहे । धार्मिक शिक्षा की साप्ताहिक पाठशालाएँ भी चलती रह सकती हैं जिसमें बच्चे वृद्ध सभी समान रुप से शिक्षण प्राप्त किया करें ।

यदि स्थान उपयुक्त मिल जाए एवं ऑफसेट प्रेस या साइक्लो स्टाइल मशीन की व्यवस्था बन जाए तो साहित्य की प्रतियां हाथों–हाथ पाठकों के पास सरलता पूर्वक पहुँचाई जाती रह सकती हैं ।

उठाने के लिये तो अगले दिनों अनेकों कदम है पर शुभारम्भ तीन कार्यक्रमों से करना चाहिए । श्री गणेश के रूप में इतने से भी काम चल जाएगा एक समारोह की योजना दूसरा प्रकाशनों की व्यवस्था तीसरा साप्ताहिक पूजा तथा शिक्षा । जहां इतना बन पड़ेगा, वहां अगले अति महत्वपूर्ण कदम उठाने में भी कोई संदेह न रहेगा ।

प्रवासी परिजन हमारी अपनी राष्ट्र भूमि के संदेश वाहक के रुप में विश्व भर में विद्यमान हैं । यदि वे संस्कृति रक्षा, प्रज्ञा प्रसार एवं उत्कृष्ट आदर्शवादिता से सारे विश्व समुदाय को अनुप्राणित करने का दायित्व अपने हाथों में ले लें तो यह आशा की जा सकती है कि ऋषि का आप्त वचन "उदार चरितानं तु वसुधैव कुटुम्बकम्" निश्चित ही शीघ्र ही सार्थक होगा– चरितार्थ होगा ।

क्र० २१६/प्र० युग निर्माण योजना, मु० युग निर्माण प्रेस मथुरा, मूल्य ४० पैसा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org